REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

''मध्यप्रदेश की भौगोलिक स्थिति और पर्यटन स्थल''
(सिवनी जिले के विशेष सन्दर्भ में)

ओमकार प्रसाद राय
सहनिदेशक, कृष्णराव शोध संस्थान, जबलपुर.

प्रस्तावना :–

भौगोलिक दृष्टि से दक्कन के पठार का उत्तर – मध्य भाग भारत भूमि के मध्य में स्थित 'हृदय प्रदेश' के नाम से विख्यात नदियों का मायका उपनाम से जाना जाने वाला यह प्रदेश अनादिकाल से भूगोल और इतिहास के केंद्र में रहा है। करोड़ों वर्ष पूर्व जब धरती पर भारत का अस्तित्व ही नही था तब पृथ्वी के विभिन्न भू–भागों के संयोजन वियोजन और पुर्नसंयोजन फलस्वरूप गौंड़वाना महाद्वीप का हिस्सा भारतीय प्रायद्वीप के मध्य भाग में आकर स्थित हुआ इसके साथ ही समय बीतते–बीतते आधुनिक मध्यप्रदेश का प्रादुर्भाव हुआ।

देश के मध्य भाग में स्थित होने के कारण प्रदेश को अनेक लाभ स्वमेव प्राप्त हो जाते हैं। जैसे आवागमन हेतु देश से चौतरफा संपर्क इसके मध्य भाग में स्थित होने के कारण सर्वसुलभ है । यह प्रदेश देश के उत्तर–दक्षिण, पूर्व–पश्चिम भाग में जाने वाले विभिन्न मार्गों का केंद्र है साथ ही प्रकृति से वरदान स्वरूप प्राप्त वनों, नदियों तथा अन्यान्य प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर इस राज्य में पर्यटन का सुनियोजित विकास हुआ है। यहाँ सभी प्रकार के पर्यटकों जैसे इतिहास पसंद पर्यटकों हेतु विभिन्न पर्यटन स्थल ऐतिहासिक दुर्ग ग्वालियर दुर्ग, धार का किला, असीरगढ़ किला, गिन्नौरगढ़ दुर्ग, चंदेरी का किला, बांधवगढ़ दुर्ग, रायसेन दुर्ग, ओरछा दुर्ग, मंडला दुर्ग से लेकर राजा नल और दमयंती की प्रणय कथाओं हेतु विख्यात शिवपुरी स्थित नरवर का किला तथा बुंदेला नरेश वीर सिंह देव द्वारा निर्मित दतिया का किला, इतिहास प्रसिद्ध सम्राट कार्तवीर्य अर्जुन की प्राचीन राजधानी महिष्मति ऐतिहासिक पर्यटकों का अपनी ओर आकर्षित करते है। वहीं प्रदेश में विश्वप्रसिद्ध उदयगिरि (विदिशा) भर्तृहरि (उज्जैन) तथा विन्ध्याचल की पहाड़ियों में स्थित बौद्ध चित्रों के प्राण कही जाने वाली भित्ति चित्रों से युक्त बाघ की गुफाएँ, भीम बेठका जो प्राचीनतम पर्वतमाला विंध्य के उत्तरी छोर से घिरा है स्थित है। प्रदेश में धार्मिक दृष्टि से विभिन्न धर्मों के पवित्र तीर्थ स्थल मुक्तागिरी (बैतूल) जैन मतावलम्बियों का पवित्र तीर्थस्थल, बावनगजा (बड़वानी) बावनगजा की पहाड़ियों में स्थित जैन तीर्थ स्थल, विन्ध्य पर्वत की घुरैल पहाड़ी पर स्थित राजगढ़ जिले का पशुपतिनाथ मंदिर, उज्जैन का महाकाल मंदिर जो बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है के साथ ही एक और ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर–ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग जो खण्डवा जिले की मंधाता नगरी में स्थित है प्रदेश में चित्रकूट, अमरकंटक जैसे अनेक धार्मिक स्थल मौजूद हैं जहाँ आकर तीर्थयात्रियों के मन को शांति मिलती है। अतुलनीय प्राकृतिक सौंदर्य वाले पर्यटन स्थलों की दृष्टि से धनी यह प्रदेश पचमढ़ी का अद्भुत सौंदर्य, भेड़ाघाट की चमचमाती संगमरमरी चट्टानें और जलप्रपात का शोर, बांधवगढ़, पन्ना के साथ ही आध्यात्मिक दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण नदी नर्मदा जिसकी परिक्रमा भारत के साथ ही विश्व के अनेक देशों के लोग करते हैं विश्व की यह एकमात्र नदी है जिसकी परिक्रमा की जाती है तथा जिसके नाम पर एक पुराण नर्मदा पुराण है इस नदी को जनमानस में माँ का दर्जा प्राप्त है प्रदेश की जीवन रेखा कही जाने वाली इस नदी का उद्गम तथा सर्वाधिक प्रवाह क्षेत्र मध्यप्रदेश में ही स्थित है।

यह प्रदेश प्राकृतिक ऐतिहासिक तथा धार्मिक पर्यटकों हेतु आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। प्रदेश का महत्व पर्यटन की दृष्टि से इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रदेश में प्राचीनकाल तथा मध्यकालीन विशेषताओं को

सहेजकर रखा गया है। यहाँ ओरछा, भोजपुर और उदयपुर के प्राचीन मंदिरों के साथ ही आदमगढ़ (होशंगाबाद नगर की बाहरी सीमा पर नर्मदा नदी के दक्षिण तट पर स्थित विश्वविख्यात चित्रित शैलकृत गुफाएँ) खजुराहो के मंदिर, वराहमिहिर की जन्मभूमि (कायथा) उज्जैन जो प्राचीन कापित्थ्य के नाम से इतिहास में जाना जाता है यह छोटी काली सिन्ध नदी के तट पर स्थित है के साथ ही अनेकानेक पर्यटन स्थल मौजूद हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

आज का मध्यप्रदेश वही प्राचीनतम भूखण्ड है जहाँ भगवान राम ने वनगमन के दौरान विचरण किया इस हेतु चित्रकूट का धार्मिक महत्व अतुलनीय है। भगवान श्रीकृष्ण ने उज्जयिनी में संदीपनी ऋषि के आश्रम में शिक्षा पाई। पांडवों ने अज्ञातवास गुजारा इस तरह ऐतिहासिक और पौराणिक संदर्भों से गुंथे मध्यप्रदेश के अतीत की एक नहीं अनेक गौरव गाथाएँ हैं। अनादिकाल में इस भू–भाग को आर्यावर्त के तौर पर भी जाना गया। मनु ने अपनी प्रसिद्ध कृति मनुस्मृति में इसे कुछ इस तरह परिभाषित किया है जो हिमालय और विन्ध्याचल के बीच का हिस्सा है और विनशन के पूर्व में है तथा प्रयाग के पश्चिम में है वह मध्यप्रदेश कहा गया है।

हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये यत्प्राग्विनशनादपि ।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ।।
आ समुद्रातु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् ।
तयोरेवान्तरं विर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः ।।

अध्ययन का उद्देश्य :– सिवनी जिले के विभिन्न पर्यटन स्थलों की भौगलिक अवस्थिति तथा वर्तमान परिदृश्य का अध्ययन करना एवं उनके महत्व पर प्रकाश डालना।

अध्ययन विधि :– प्रस्तुत शोध प्रपत्र ''मध्यप्रदेश की भौगोलिक स्थिति और पर्यटन स्थल'' (सिवनी जिले के विशेष सन्दर्भ में) अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर अध्ययनकर्त्ता स्वयं जाकर तथा अन्य विविध स्रोतों से संगृहित जानकारिओं का सतत् अध्ययन व विश्लेषण के माध्यम से वास्तविक तथ्य को परिवेषित किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :– आज के मध्यप्रदेश की भौगोलिक स्थिति 21°6′ उत्तरी अक्षांश से 26°30′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 74° पूर्वी देशांतर से 82°48′ पूर्वी देशांतर के मध्य है। पूर्णतः भू–आवेष्ठित इस राज्य की सीमा उत्तर में चंबल तथा दक्षिण में ताप्ती नदी पूर्व में बघेलखण्ड पठार तथा पश्चिम में अरावली पहाड़ी से निर्धारित होती है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का दूसरा बड़ा राज्य है जहाँ देश की 6 प्रतिशत जनसंख्या निवासरत है। देश के कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. में इसका हिस्सा 9.38 प्रतिशत (3,08,252 वर्ग किमी.) है तथा देश की जनसंख्या 1,21,05,06,573 में से मध्यप्रदेश में 7,26,26,809 जनसंख्या निवासरत है। इस तरह जनसंख्या के आधार पर मध्यप्रदेश देश का छटवाँ सबसे बड़ा प्रदेश है। प्रशासनिक दृष्टि से प्रदेश 10 संभाग तथा 51 जिलों के माध्यम से प्रशासित होता है।

अध्ययन हेतु चयनित सिवनी जिला जिसे ''मध्यप्रदेश का लखनऊ'' उपनाम से जाना जाता है, का गठन 1 नवंबर 1956 में प्राथमिक रूप से जनजातीय बहुल जिले के रूप में किया गया। जिले का नाम सेओना नामक वृक्ष के नाम पर किया गया है जो जिले में बहुतायत पाया जाता है। मध्यप्रदेश के दक्षिणी भाग में सतपुड़ा – मैकल श्रेणी पर स्थित जिले का विस्तार 20°37′ से 22°57′ उत्तरी अक्षांश तथा 79°19′ से 80°17′ पूर्वी देशांतर के मध्य है। जिले की सीमायें उत्तर पूर्व में मंडला जिला, उत्तर में जबलपुर जिला, उत्तर–पश्चिम में नरसिंहपुर जिला, पश्चिम में छिंदवाड़ा जिला, दक्षिण–पूर्व में बालाघाट जिला एवं दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले से साझा होती हैं। जिले का कुल क्षेत्र 8758 वर्ग किमी. तथा जनसंख्या 13,79,131 है। वैनगंगा नदी को सिवनी जिले की जीवनधारा के नाम से जाना जाता है। जिले का अधिकांश भाग समुद्र सतह से 300 से 450 मीटर ऊँचा है प्रशासनिक

अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति मानचित्र

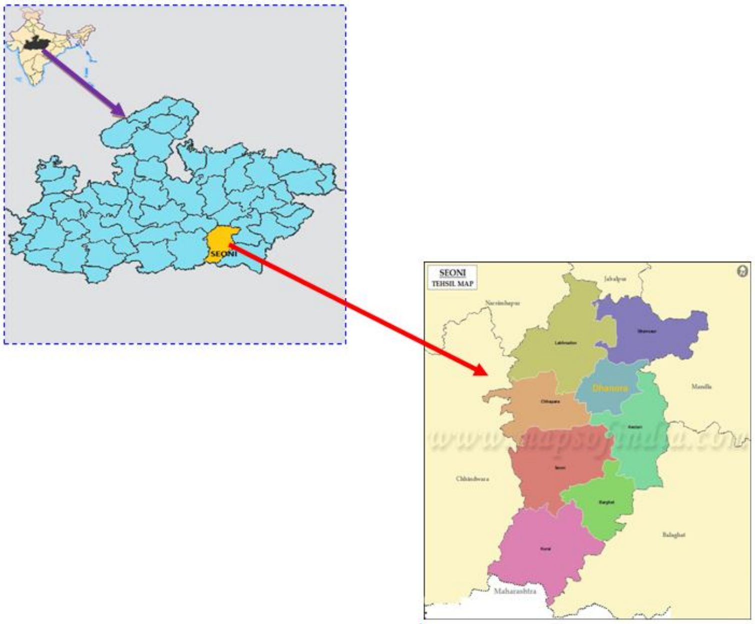

दृष्टि से जिला 8 तहसीलों सिवनी, बरघाट, केवलारी, लखनादौन, घंसौर, धनौरा, छपारा, कुरई तथा 8 विकासखण्डों सिवनी, बरघाट, केवलारी, लखनादौन, धनौरा, घंसौर, छपारा तथा कुरई के जरिये प्रशासित होता है।

मानवीय चरित्र तथा जातीय गुण बहुत हद तक जलवायु पर निर्भर करते हैं। जिले की जलवायु पर प्राकृतिक रचना एवं समुद्र तट से दूरी का विशेष प्रभाव पड़ा है। समुद्र से आने वाली पवनों के समकारी प्रभाव से वंचित होने के कारण यहाँ की जलवायु समान्यतया स्थलीय एवं मानसूनी पवनों से प्रभावित है। वर्षा ऋतु में दैनिक तापान्तर कम एवं आर्द्रता अधिक होती है। शीत ऋतु में न्यूनाधिक वर्षा एवं सुखद ठंडा वातावरण होता है। ग्रीष्म ऋतु में भीषण गर्मी एवं जलवायु सम्बन्धी अनेक विविधताओं जैसे – मानसूनी प्रभाव एवं चक्रवाती प्रभाव जैसी विशेषताएँ पायी जाती हैं।

पर्यटन की दृष्टि से जिला धनी है यहाँ ऐतिहासिक प्राकृतिक तथा धार्मिक दृष्टि से अनेक पर्यटन स्थल मौजूद हैं तथा समय–समय पर लगने वाले मेले भी जिले में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। वास्तव में यह जनजाती बहुल जिला प्राचीन काल से ही आदिकालीन संस्कृति का संरक्षण करने में अग्रणी रहा है। यहाँ वनों में निवासरत जनजातीयजन आज भी प्रकृति से साम्य स्थापित करते हुए अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं जिले में गोंड जनजाति बहुतायत संख्या में लगभग पूरे जिले में निवासरत है जो पर्यटकों को गोंड संस्कृति को पास से निहारने का सुअवसर प्रदान करती है। वहीं मोगली लैंड के रूप में प्रसिद्ध यह जिला पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। जिले में हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्मों के श्रद्धा स्थलों के साथ ही प्राकृतिक स्थल के रूप में पेंच राष्ट्रीय उद्यान, मठघोघरा, मुंडारा तथा आमोदागढ़ जैसे प्राकृतिक पर्यटन स्थल मौजूद हैं वहीं ऐतिहासिक दृष्टि से टुरिया शहीद स्मारक स्थल, रिछारिया, दलसागर तालाब आदि महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पर्यटन स्थल मौजूद हैं।

सिवनी जिले के पर्यटन स्थल :

ऐतिहासिक पर्यटन स्थल : टुरिया ' शहीद स्मारक स्थल,
रिछारिया बाबा का मंदिर,
ऐतिहासिक दलसागर तलाब,
सोना रानी का महल,

प्राकृतिक पर्यटन स्थल :
श्री शिवधाम मठघोघरा,
मुंडारा,
गढ़ी
इंदिरा गांधी पेंच राष्ट्रीय उद्यान, कर्माझिरी,
अमोदागढ़,

धार्मिक पर्यटन स्थल :
गुरू रत्नेश्वर धाम दिघोरी,
बंजारी देवी का मंदिर छपारा,
अम्बामाई का मंदिर आमागढ़,
हनुमान मंदिर जाम,
कात्यायनी सिद्धपीठ बंडोल,
शनि मंदिर पलारी,
कातलबोडी,
साई मंदिर नगझर,
आष्टा का काली मंदिर,
दिगम्बर जैन मंदिर सिवनी,
सिवनी नगर के चर्च,
मोहम्मद शाह वली की दरगाह ज्यारत,

ऐतिहासिक पर्यटन स्थल – ऐतिहासिक पर्यटन इतिहास में रूचि रखने वाले और ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिये किया जाता है। ऐतिहासिक स्थल पूरे विश्व में पर्यटन के महत्वपूर्ण केन्द्रों के रूप में उभर रहे हैं।

टुरिया शहीद स्मारक स्थल – यह पर्यटन स्थल सिवनी से लगभग 45 किमी. की दूरी पर सिवनी– नागपुर सड़क मार्ग पर कुरई विकासखण्ड के ग्राम खवासा से लगभग 10 किमी. दूर पेंच राष्ट्रीय उधान क्षेत्र के ग्राम टुरिया में स्थित है। यह ऐतिहासिक पर्यटन स्थल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय ग्रामीणों द्वारा स्वतंत्रता की अलख जगाने के कारण जाना जाता है। यहाँ 9 अक्टूबर 1931 के वन आंदोलन के समय ग्रामीणों ने अंग्रेजी हुकुमत के कानून के खिलाफ वन में घास काटकर आंदोलन का श्री गणेश किया था जिसमें प्रमुख योगदान खवासा के मूकालोहार और उनके साथियों का था। आंदोलन के दौरान पुलिस द्वारा गोलियाँ चलाने से चार व्यक्ति शहीद हुये थे। यहाँ शहीद स्मारक बनाया गया है तथा 9 अक्टूबर को शहीदों की याद में प्रतिवर्ष मेला लगता है। यह स्मारक स्थल प्रत्येक देशभक्त को अपने देश के स्वतंत्रता आंदोलन में प्राणों को न्योछावर करने वाले शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु आकर्षित करता है।

रिछारिया बाबा का मंदिर – यह पुरातात्विक महत्व का स्थल है यहाँ काले पत्थर की भगवान विष्णु की अष्टभुजी मूर्ति स्थापित है। स्थानीय निवासियों के अनुसार क्षेत्र में कार्यरत वन विभाग के एक कर्मचारी को भगवान ने स्वप्न दिया जिसके कारण उन्होनें उस स्थान की खुदाई करवाकर मूर्तियों को निकलवाया। इस स्थान में खुदाई के दौरान मंदिर या महलों में उपयोग होने वाले पत्थर भी निकले हैं साथ ही एक जिलहरी भी निकली है जो वहाँ स्थापित है। जिस व्यक्ति को भगवान ने स्वप्न दिया उनका नाम देवी प्रसाद नाकेदार था आज भी उनके वंशज आसपास के गांव में निवासरत हैं। यह घटना 25–30 वर्ष पूर्व की है। जिले के धनौरा विकासखण्ड के अंतर्गत आने वाला यह स्थल ग्राम भजिया एवं ग्वारी के मध्य स्थित है जहाँ धनौरा से खमरिया गोसाई जाने वाली पक्की सड़क के माध्यम से पहुँचा जा सकता है । मान्यता है कि इस स्थल पर मांगी जाने वाली मन्नतें पूरी होती हैं तथा मन्नतें पूरी होने पर लोग भंडारे का आयोजन करवाते हैं। इस स्थान पर दीवाली (कार्तिक पूर्णिमा) के बाद 15 दिवस का विशाल मेला लगता है जिसमें जिले के बाहर के लोग, दुकानदार तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण जन सम्मिलित होते हैं। गोसाई खमरिया निवासी धनाराम चौकसे ने बताया कि यहाँ जो मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं, वह मंदिर के पास तालाब की खुदाई के दौरान निकली थीं जिनको मंदिर बनाकर ग्रामीणों ने स्थापित करवाया है। ये मूर्तियाँ देखने में बहुत प्राचीन लगती हैं जिसके कारण इनका ऐतिहासिक

तथा धार्मिक महत्व अधिक है। यहाँ पर लगे पुरातत्व विभाग के बोर्ड के अनुसार यह मूर्तियाँ 10वीं शताब्दी की हैं।

ऐतिहासिक दलसागर तलाब :– सिवनी नगर में बस स्टेण्ड के पास राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 7 के किनारे स्थित लगभग 45–50 एकड़ में फैला यह तालाब जिसके बीच में एक टापू है इसमें हरे–भरे पेड़ लगे हैं जो देखने में मनमोहक लगता है। तलाब में सुंदर तथा स्वच्छ घाटों का निर्माण करवाया गया है। इस तालाब में नौका विहार की सुविधा उपलब्ध है जो पर्यटकों को आकर्षित करती है। यह तलाब सिवनी जिले की ऐतिहासिक धरोहर के साथ ही नगर की पहचान भी है। इसका निर्माण 13वीं–14वीं शताब्दी के मध्य का बताया जाता है जो इस क्षेत्र में गौंड़ शासकों का काल था।

प्राकृतिक पर्यटन स्थल :– पृथ्वी के अनेकानेक स्थल ऐसे हैं जो प्रकृति की सुन्दरता के कारण बरबस ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जहाँ जाकर लोग वहाँ की मनमोहक सुंदरता को निहारकर मन की शांति पाते हैं तथा वर्तमान भाग दौड़ भरी जीवनचर्या से कुछ समय निकालकर शांत क्षेत्रों जहाँ प्रदूषण न हो तथा प्रकृति प्रदत्त शांत सुन्दर स्थल हों वहां जाकर मन की प्रसन्नता पाते हैं। ये स्थल धार्मिक, ऐतिहासिक तथा अन्य महत्व के भी हो सकते हैं ऐसे ही कुछ स्थल जो सिवनी जिले की भौगोलिक सीमा में स्थित हैं का वर्णन आगे किया गया है :–

इंदिरा गांधी पेंच राष्ट्रीय उद्यान, कर्माझिरी :– 1993 में टाइगर रिजर्व घोषित इस उद्यान में भ्रमण के लिये जाने हेतु दो गेट हैं पहला गेट सिवनी–नागपुर रोड पर ग्राम सुकतरा से पश्चिम दिशा में लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर ग्राम कर्माझिरी में तथा दूसरा गेट भी सिवनी–नागपुर रोड पर सिवनी से 48 कि.मी. की दूरी पर ग्राम खवासा से 10 कि.मी. पश्चिम में टुरिया ग्राम में है जहां से इस उद्यान में प्रवेश किया जा सकता है। इन दोनों गेटों पर होटलों एवं वाहनों की सुविधा पर्यटकों हेतु उपलब्ध रहती है। यह उद्यान अक्टूबर से जुलाई के मध्य पर्यटकों हेतु खोला जाता है। उद्यान के मध्य से पेंच नदी प्रवाहित होती है जिस पर तोतलाडोह बांध बना है जिससे बिजली बनाई जाती है तथा मछली पालन भी किया जाता है। यह उद्यान अनेक दुर्लभ जीवों वाला स्थान है यहाँ खूबसूरत झीलें, ऊँचे पेड़ों के सघन झुरमुट, रंगबिरंगे पक्षियों का कलरव, शीतल हवा के झोंके सोंधी–सोंधी महकती माटी तथा वन्य प्राणियों का अनूठा संसार पर्यटकों को रोमांचित कर देता है। इस उद्यान में 210 से अधिक प्रजातियों के पक्षी, पलक झपकते ही दिखने और गायब हो जाने वाले चीतल, सांभर और नील गायें, भृकुटी ताने खड़े जंगली भैंसा और राष्ट्रीय पशु बाघ को देखने हेतु पर्यटक आते हैं। सतपुड़ा पर्वतमाला के दक्षिणी छोर पर स्थित इस उद्यान को प्रतिवर्ष शीत ऋतु में हिमालयी तराई में रहने वाले पक्षी अपनी आश्रय स्थली बनाते हैं। इस उद्यान में देश में तेजी से विलुप्त हो रहे गिद्ध भी बहुतायत संख्या में पाये जाते हैं इनमें दो प्रकार के गिद्ध प्रमुख हैं गले में लाल घेरा वाला 'किंग वल्चर' तथा जिसके पीछे सफेद धारियाँ रहती हैं 'व्हाइट ब्रेंद वल्चर' पाये जाते हैं। उद्यान में राजा तोता (करन मिट्ठू) और प्रदेश का राजकीय पक्षी दूधराज मस्ती करते देखे जा सकते हैं। तोतलाडोह बांध के कारण निर्मित विशाल झील ने वन्य जीवों की पानी की जरूरतों को पूरा किया है। पेंच नदी उद्यान के उत्तर से दक्षिण की ओर बहती है। इस राष्ट्रीय उद्यान का इतिहास गौरवशाली रहा है इसके प्राकृतिक सौंदर्य एवं समृद्धि का वर्णन आईने–अकबरी, आर.एस. स्ट्रेन्डल की ''सिवनी, कैम्प लाईफ इन द सतपुड़ा'', फोर्सैथ की 'हाई लैण्ड्स आफ सेन्ट्रल इंडिया, डनबर ब्रेन्डर की ''वाईल्ड एनीमल्स ऑफ सेन्ट्रल इंडिया में है। स्टेन्डल की आत्मकथा जैसी किताब 'सिवनी' रूडियार्ड किपलिंग की ''द जंगल बुक' लिखने में मुख्य प्रेरणा स्त्रोत थी।

द जंगल बुक का क्षेत्र :– पेंच टाईगर रिजर्व एवं इसके आसपास का क्षेत्र रूडियार्ड किपलिंग के प्रसिद्ध ''द जंगल बुक'' का वास्तविक कथा क्षेत्र है।

मोगली :–मोगली की कल्पना सर विलियम हेनरी स्लीमेन के पैम्पलेट ''एन एकाउन्ट आफ वूल्फ्स नरचरिंग चिल्ड्रेन इन देयर डेनस'' से की गई है। जिसमें वर्ष 1831 में सिवनी के पास सन्तबावड़ी नामक ग्राम में भेड़ियों के साथ पले–बढ़े एक बालक के पकड़े जाने की रिपोर्ट है। द जंगल बुक में वर्णित स्थान वैनगंगा नदी की घाटी जहाँ शेर खान मारा गया था। सिवनी जिले के ग्राम कान्हीवाड़ा तथा पर्वत मालायें आदि वास्तविक स्थान हैं। मध्यप्रदेश का यह राष्ट्रीय उद्यान मोगली के घर के रूप में विख्यात है।

श्री शिव धाम, मठघोघरा :– प्रकृति का सुंदर स्थल मठघोघरा यहाँ दो पहाड़ियों के बीच में एक गहरी गुफा है जिसमें प्राकृतिक शिवलिंग है। इस स्थान को देखने से प्रतीत होता है कि प्रकृति ने बड़े ही सुनियोजित ढंग

से भगवान शिव के लिये कैलाश के बाद इस स्थान का निर्माण किया होगा जहाँ पहाड़ों में रहने वाले शिव कभी मैदानों में बसेरा करें तो यह स्थल उनकी आरामगाह बन सके। यह स्थल प्रकृति की अद्भुत तथा अद्वितीय रचना है यहाँ पूरे वर्ष पहाड़ से जलधारा बहती रहती है जिसका जल एक गहरे कुंड में गिरता है जहां शिवलिंग स्थित है, यहाँ एक तरह से शिवजी का अभिषेक करती प्रकृति का नजारा प्रतीत होता है। इस स्थान पर महाशिवरात्रि में एक सप्ताह का मेला लगता है। इस पर्यटन स्थल में ऊँचे–ऊँचे पहाड़ एवं मनमोहक घने वृक्ष पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस पर्यटन स्थल पर लखनादौन से सड़क मार्ग के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। लखनादौन के 10–12 कि.मी. की दूरी पर यह पर्यटन स्थल स्थित है।

गढ़ी :– लखनादौन तहसील के ग्राम आदेगाँव का प्राचीन किला जिसे गढ़ी के नाम से जाना जाता है यहाँ प्राचीन काल भैरव मंदिर स्थित है। गढ़ी के पीछे एक तालाब भी है इस स्थान का महत्व यहाँ पाया जाने वाला पेड़ श्यामलता के कारण है जिसके विश्व में केवल दो ही पेड़ हैं ऐसा ग्रामीणों का कहना है। इस वृक्ष की विशेषता इसकी प्रत्येक पत्ती में राम–राम लिखा होना है और यह लिखावट केवल सिद्ध पुरूषों को ही नजर आती है। इस वृक्ष के बीजों में अंकुरण नहीं होता ऐसा ग्रामीणों तथा पर्यटकों ने बताया। एक पर्यटक भाग्यरेखा चौकसे जो पास के ही ग्राम रहली में शिक्षिका हैं ने बताया कि देश के कोने–कोने से लोग इस वृक्ष से भेंट करने आते हैं। यहाँ सच्चे मन से मनौती मांगने पर वह अवश्य पूरी होती है।

मुंडारा :– वैनगंगा नदी का उद्गम स्थल मुंडारा प्राकृतिक तथा धार्मिक दोनों प्रकार के पर्यटकों हेतु प्रसिद्ध है। यह स्थल सिवनी–नागपुर रोड पर 18 कि.मी. की दूरी पर बसे ग्राम गोपालगंज से लगभग 6 कि.मी. पूर्व में है जहाँ ग्राम मुंडारा में स्थित रजोताल से वैनगंगा नदी एक कुंड से निकलती है। इस स्थान पर मकर संक्रांति में एक सप्ताह का मेला लगता है। इस नदी का धार्मिक महत्व पुराणों में वर्णित है जहाँ इसे वेणु या वेण्या के नाम से वर्णित किया गया है। यहाँ मंदिर भी बनाये गये हैं। इसे प्राणदायिनी नदी कहा जाता है इसके संबंध में एक दंतकथा बैनी और गंगा (पति–पत्नी) के संबंध में प्रचलित है।

आमोदागढ, छुई :– सिवनी–मंडला रोड पर बसा यह ग्राम जिसकी पूर्वी दिशा में लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर प्राकृतिक घटाओं से घिरा क्षेत्र आमोदागढ़ है यहाँ हिर्री नदी बहुत गहरी है। शीतल जल, पहाड़ एवं वृक्षों से घिरा यह मनोरम स्थल पर्यटकों को पिकनिक मनाने हेतु आकर्षित करता है।

धार्मिक पर्यटन स्थल :– विभिन्न धर्मावलम्बियों द्वारा अपनी श्रद्धा तथा मान्यताओं के अनुसार विभिन्न तीर्थ स्थलों की यात्रा की जाती है तथा ऐसे स्थानों पर जाकर पर्यटक मन की शांति तथा आध्यात्मिक सुख का अनुभव करते हैं।

गुरू रत्नेश्वर धाम दिघोरी :– हिन्दु धर्म के शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती की जन्म स्थली दिघोरी वैनगंगा के तट पर स्थित धार्मिक पर्यटक स्थल है। यह स्थल सिवनी–जबलपुर मार्ग के ग्राम राहीवाड़ा से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इस स्थल पर दक्षिण शैली में एक विशाल मंदिर बना हुआ है जहाँ स्फटिक शिवलिंग स्थापित है। इस स्थल पर मकर संक्रांति तथा महाशिवरात्रि पर मेले का आयोजन होता है।

कातलबोड़ी :– शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती की माता की जन्म स्थली (मातृ धाम) के नाम से प्रसिद्ध इस स्थल में राजराजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी का विशाल मंदिर स्थित है। यह स्थल सिवनी–छिंदवाड़ा मार्ग पर स्थित है। यह स्थल ललिताम्बा देवी जी के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है , यहाँ दोनों नवरात्र में मेला लगता है।

कात्यायिनी सिद्धपीठ, बंडोल :– यह सिवनी–जबलपुर मार्ग पर स्थित प्रसिद्ध प्राचीन धार्मिक स्थल है यहाँ योगमाया कात्यायिनी सिद्धपीठ स्थित है।

बंजारी देवी का मंदिर, छपारा :– सिवनी–जबलपुर मार्ग पर छपारा विकासखंड के अंतर्गत बंजारी देवी माँ का सुन्दर मंदिर पहाड़ी के पास बना है। मंदिर में बंजारी देवी की सुंदर प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के सामने हनुमान जी का मंदिर भी स्थित है। इस स्थान पर चैत्र एवं शारदेय दोनों नवरात्र पर मेला लगता है तथा दीपावली के बाद मड़ई मेला भी लगता है। यहाँ पर्यटकों के विश्राम हेतु एक धर्मशाला बनवाई गई है।

वैष्णव देवी मंदिर, सिलादेही :– सिवनी–नागपुर मार्ग पर सिलादेही ग्राम के पीछे पहाड़ी पर माँ वैष्णव देवी की गुफा स्थित है। ग्रामीणों के अनुसार गांव में शंकराचार्य स्वरूपानंद जी ने भागवत की थी। इसके बाद पहाड़ी का पूजन शंकराचार्य जी द्वारा किया गया जिससे माँ वैष्णव देवी की मूर्तियाँ स्वयं प्रकट हुई थीं। पूजन के बाद यहाँ से जलधारा निकली थी जिसे अमरगंगा नाम दिया गया है।

सिद्ध शनिधाम मंदिर, पलारी टेकरी :– यह स्थान ग्राम टेकरी से आगे राष्ट्रीय राजमार्ग के पश्चिम में बंजारी टेकरी पलारी एवं चावड़ी के पास स्थित विश्व का द्वितीय स्वयंभू सिद्ध श्री शनिधाम मंदिर है। मूर्ति एक पहाड़ी पर स्थित है, यहाँ शंकर जी एवं हनुमान जी का भी मंदिर है।

माँ अम्बामाई देवीजी का मंदिर, आमागढ़ :– सिवनी–बालाघाट रोड में आमागढ़ से 2 कि.मी. की दूरी पर जंगल में अम्बामाई का मंदिर स्थित है जहाँ चैत्र नवरात्र में मेला लगता है। इस स्थान पर सदाबहार झरना बहता है जिसका जल दूधिया सफेद दिखाई देता है। यहीं पर पंचमुखी हनुमान जी का भी प्रसिद्ध मंदिर है। मंदिर के नीचे नान्ही कन्हार जलप्रपात है जिससे यह पर्यटन स्थल प्राकृतिक तथा धार्मिक पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

आष्टा का काली मंदिर :– बरघाट विकासखण्ड के ग्राम धारनाकला के दक्षिण दिशा में लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर ग्राम आष्टा में माँ काली की काले पत्थर की अष्टभुजी प्रतिमा है जहाँ नवरात्र में मेला लगता है। कहा जाता है भगवान राम वनवास के समय यहाँ आये थे।

दिगम्बर जैन मंदिर :– सिवनी नगर के मध्य शुक्रवारी क्षेत्र में स्थित यह मंदिर अपनी विशालता एवं भव्यता के कारण विख्यात है। जैन मंदिरों के इतिहास में सिवनी के कलात्मक जैन मंदिरों का प्रमुखता से उल्लेख हुआ है। इन मंदिरों का निर्माण 1813 से प्रारम्भ होकर विभिन्न चरणों में सम्पन्न हुआ है। यह 17 मंदिरों का समूह है जिसमें 24 तीर्थंकरों की मूर्तियाँ हैं। इस मंदिर के शिखर में उत्कीर्ण भगवान श्रीराम, लक्ष्मण तथा माता सीता के साथ हनुमान जी की प्रतिमा, गोवर्धनधारी श्रीकृष्ण, लक्ष्मीजी, कालभैरव और बाबा रामदेव आदि देवी–देवताओं की मूर्तियाँ हैं जो हिन्दू–जैन सामंजस्य का अप्रतिम उदाहरण है।

सिवनी नगर के चर्च :– नगर में प्रोटेस्टैंट तथा कैथोलिक दोनों चर्च हैं। कैथोलिक चर्च का निर्माण 1898 में अंग्रेज अधिकारियों के लिये चर्च ऑफ इंग्लैण्ड द्वारा निर्मित किया गया था। यह सोलहवीं शताब्दी की यूरोपीय वास्तुकला पर आधारित एक सुंदर चर्च है।

मोहम्मद शाह वली की दरगाह, ज्यारत :– सिवनी–जबलपुर मार्ग पर ज्यारत नाके के पास मोहम्मद शाह वली उर्फ मियांसाहब नाम की एक पीर दरगाह है जिसका निर्माण 18वीं सदी में हुआ था। कहते हैं शाह वली ने तत्कालीन दीवान सुजान अली की जान लेने पर उतारू एक पागल हाथी को डांटकर ही शांत कर दिया था।

अन्य पर्यटन स्थल :–

संजय सरोवर बांधः – छपारा क्षेत्र के ग्राम भीमगढ़ के समीप वैनगंगा नदी पर बना यह बांध एशिया का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध है। यहाँ पर्यटकों हेतु नौका विहार की सुविधा उपलब्ध रहती है। बांध के निकट पहाड़ी पर रेस्ट हाउस भी बनाया गया है जहां से बांध का पूरा नजारा बहुत ही सुंदर दिखाई देता है। जहाँ तक नजरें जाती हैं पानी ही पानी नजर आता है।

पायली रेस्ट हाउस :– घंसौर विकासखंड के अंतर्गत आने वाला ग्राम पायली जहाँ पहाड़ी पर रेस्ट हाउस बनाया गया है के सामने नर्मदा नदी पर बने बरगी बांध का पानी भरा है। यहाँ बीच–बीच में अनेक छोटे टापू बने हैं। यहाँ का नजारा देखने लायक है जहाँ तक नजरें जाती हैं पानी ही पानी नजर आता है।

निष्कर्ष :–

पर्यटन व्यस्त मानव के जीवन हेतु आवश्यक आवश्यकता है। व्यस्त जीवनचर्या में से कुछ समय निकालकर व्यक्ति अपने पसंदीदा पर्यटन स्थलों पर जाकर कुछ समय बिताकर मानसिक शांति पाता है तथा प्रकृति के सुरम्य स्थलों में जाकर स्वास्थ्य लाभ लेता है और पुनः सकारात्मक उर्जा के साथ अपने कार्य में लौट आता है । सिवनी जिला पर्यटन स्थलों के मामले में धनी है तथा यहाँ प्रकृति के वरदान स्वरूप अनेक मनमोहक स्थल मौजूद हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जिले में पर्यटन हेतु विशेष ध्यान देकर और अधिक स्थलों को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित किया जा सकता है। अभी यहां के कई छोटे पर्यटन स्थल सुनियोजित विकास के अभाव में महत्वहीन नजर आते हैं जबकि वे अच्छे पर्यटक स्थलों के रूप में विकसित हो सकते हैं।

संदर्भ सूची :–

1. अहूजा, राम (2003) "सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान", रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. जिला सांख्यिकी पुस्तक सिवनी 2017।
3. "भारत 2017" प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली।
4. "मध्यप्रदेश सन्दर्भ" (2012), मध्यप्रदेश जनसंपर्क का प्रकाशन,जनसंपर्क संचालनालय, जनसंपर्क भवन, टेगौर मार्ग, बाणगंगा, भोपाल।
5. "मध्यप्रदेश सन्देश, जनसंपर्क संचालनालय, जनसंपर्क भवन, बाणगंगा, भोपाल।
6. शुक्ला, राजेश (2009) "पर्यटन भूगोल", अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
7. शर्मा, श्रीकमल (2015)"मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन", मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
8. सहाय, शिवरूप (1991) "पर्यटन – सिद्धांत और प्रबंधन तथा भारत में पर्यटन", मोतीलाल बनारसीदास, बंग्लो रोड, दिल्ली।

LBP PUBLICATION